'सरस्वती भ्रमण'
(EXCURSIONS)

विगत वर्षों से कुछ विकसित विद्यालय अच्छे नागरिकों के निर्माण हेतु छात्र और छात्राओं को शिक्षण देने में सामाजिक साधनों[2] का उपयोग कर रहे हैं। यह अनुभव किया गया है कि एक सुयोग्य नागरिक के लिए आवश्यक है कि वह अपने समाज से विशेष रुचि रखे और समाज की तरफ स्वस्थ, अनुकूल तथा रुचिकर दृष्टिकोण अपनाने का समय बालक के विद्यालय में प्रवेश के समय ही आरम्भ हो जाता है। समाज के प्रति इस प्रकार की रुचि केवल पुस्तकों के अध्ययन से, चित्र देखने से तथा समाज के बारे में अपूर्ण सूचना प्राप्त कर लेने से पूर्णरूपेण विकसित नहीं हो सकती है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए समाज में भिन्न-भिन्न स्थान पर पर्यटन (Trips) ले जाने चाहिए जिससे बालकों को प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त हो सके, क्योंकि बहुधा पुस्तक पढ़ने से प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता है।

---

1 School Journey, Picnics, educational visits.

2 Community resources.

Scanned with CamScanner

इस प्रकार के पर्यटनों के भिन्न-भिन्न नाम

शाला के बच्चों के इस प्रकार के पर्यटनों को भिन्न-भिन्न नाम दिये जाते हैं; जैसे— सरस्वती भ्रमण (Excursions), क्षेत्रीय पर्यटन, स्कूल यात्राएँ आदि। कुछ अध्यापक क्षेत्रीय पर्यटन पर अधिक जोर देते हैं, कुछ सरस्वती-भ्रमण पर। कुछ लोग सरस्वती-भ्रमण का एक यात्रा से आशय केवल एक आनन्ददायक उत्तेजना से लगाते हैं, उनका विचार किसी प्रकार के गहन अध्ययन से नहीं है, परन्तु यह आवश्यक है कि शाला का समस्त कार्य आनन्दप्रद होना चाहिए और बालकों के मस्तिष्क में एक विशेष प्रकार की उत्तेजना पैदा होनी चाहिए। अगर अध्यापक इस प्रकार के भ्रमणों से एक ठोस ज्ञान की इच्छा करता है तो ऐसा कोई कारण नहीं है कि ठोस ज्ञान को प्राप्ति का बालकों में विकास न हो। इन सब भ्रमणों का मुख्य उद्देश्य बालकों को समुदाय के जीवन को सीधे सम्पर्क में लाना है जिससे बालक जीवन सम्बन्धी समस्याओं का ज्ञान प्राप्त कर सकें।

सामाजिक अध्ययन के भिन्न-भिन्न विषयों में सरस्वती-भ्रमण का महत्त्व

किण्डरगार्टन पद्धति में बच्चे अपनी शाला के पड़ोस का ज्ञान छोटे-छोटे पर्यटन ले जाकर प्राप्त करते हैं। जैसे-जैसे बालक उन्नति करता जाता है, उनसे पर्यटनों के क्षेत्र भी विस्तृत होते जाते हैं।

भूगोल शिक्षण में सरस्वती-भ्रमण का महत्त्व

स्थानीय भूगोल का ज्ञान प्राप्त करने के लिए छोटी-छोटी सरस्वती यात्राएँ तीसरी या चौथी कक्षाओं के बालक द्वारा की जा सकती हैं क्योंकि उनके विषय में पहाड़ियाँ, घाटियाँ, नदियाँ, मिट्टी के कटाव तथा अन्य प्राकृतिक दृश्य होते हैं जिनके बारे में कक्षा के अन्दर पुस्तकों द्वारा पूर्णरूपेण ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता है। उदाहरणार्थ, अगर बालकों को किसी नदी के समीप ले जाकर कटाव क्रिया आदि को बताया जाय तो उनको ठोस ज्ञान प्राप्त हो सकता है। इसी प्रकार उत्पादन की, खान खोदने की, खेती करने की, मछली पकड़ने की एवं वृक्षारोपण की समस्याओं का बालकों को अध्ययन कराना है तो बालकों को सम्बन्धित क्षेत्रों में ले जाकर प्रत्यक्ष, सीधा व ठोस ज्ञान दिया जा सकता है। जहाँ तक प्रयोग हो सके तथा सम्भव हो सके, भूगोल-शिक्षण वास्तविकता के दर्शन द्वारा ही होना चाहिए।

Scanned with CamScanner

सरस्वती-भ्रमण क्यों आवश्यक है ?

(1) पाठशाला के कार्यों में आनन्द की वृद्धि होती है। बहुत-सी पाठशालाएँ सरस्वती-भ्रमण को अपने समय-विभाग का नियमित भाग मानती हैं क्योंकि उन्होंने अनुभव द्वारा यह सीखा है कि शाला-कार्य के बहुत-से मुख्य उद्देश्य क्षेत्रीय पर्यटनों द्वारा ही आसान रूप से प्राप्त हो सकते हैं।

(2) बालकों की जिज्ञासा की प्रवृत्ति का विकास होता है। जब बालक किसी वस्तु के समीप जाकर उसके कार्यों को प्रत्यक्ष देखते हैं तो उन विभिन्न कार्यों को देखकर उनका कारण जानने को उत्सुक रहते हैं।

(3) वास्तविकता के सम्पर्क में आने के लिए तथा स्थिर ज्ञान प्राप्त करने के लिए इस प्रकार के भ्रमण सहायक सिद्ध होते हैं।

(4) समाज और विद्यालय के निकट सम्बन्ध स्थापित होते हैं, जो अध्यापक क्षेत्रीय भ्रमण पर ले जाते हैं वे विश्वास करते हैं कि शाला का कार्य समाज के कार्यों से सम्बन्धित होना चाहिए। समाज के लोग जब यह देखेंगे कि उनके बालक हमारे से सम्बन्धित समस्याओं में वास्तविक रूप से रुचि लेते हैं तो सभी शाला कार्यों में उत्साह से भाग लेंगे।

(5) सरस्वती-भ्रमण से बालकों को परस्पर निर्भरता का ज्ञान होता है। बच्चे जब क्षेत्रीय भ्रमण पर जाते हैं तो वे देखते हैं कि समाज का प्रत्येक वर्ग भिन्न-भिन्न कार्य करता है तथा प्रत्येक के कार्य एक-दूसरे के सहायक सिद्ध होते हैं; जैसे—कोई खेती करता है, कोई व्यापार

Scanned with CamScanner

करता है, कोई पशुपालन करता है। अतः समाज के सदस्य एक-दूसरे के कार्यों पर आश्रित होते हैं। इससे बालकों में भ्रातृत्व की भावना का विकास होता है। इसी के आधार पर अन्तर्राष्ट्रीय भ्रातृ-भाव की नींव पड़ सकती है।

(6) बालकों की झिझक, संकोच तथा शर्मीलापन समाप्त हो जाता है, प्रत्येक बालक को आगे बढ़ना होता है तथा व्यक्तिगत रूप से ज्ञान अर्जित करना पड़ता है। अध्यापक भी प्रत्येक बालक को समझने में सफल हो जाता है।

(7) सुसंगठित आयोजित सरस्वती भ्रमणों के द्वारा बालकों की योजना बनाने तथा साथ-साथ कार्य करने की शक्ति का विकास होता है। उत्तरदायित्व तथा नेता बनने की भावना का विकास होता है।

(8) सरस्वती-भ्रमणों से सहयोग तथा अनुशासन की भावना का भी विकास होता है।

सरस्वती-भ्रमण के लिए अध्यापक का प्रारम्भिक प्रयास

(1) जिस क्षेत्र में शाला स्थित है, उस क्षेत्र के साधनों की शिक्षक को पूर्णरूपेण जानकारी पहले से ही होनी चाहिए। इस प्रकार की जानकारी से बालकों को महत्त्वपूर्ण वस्तुओं के निरीक्षण का लाभ प्राप्त हो सकता है।

(2) प्रधानाध्यापक भी सरस्वती-भ्रमण के सम्बन्ध में अध्यापक की सहायता कर सकता है। वह सरस्वती-भ्रमण सम्बन्धी आवश्यक सूचनाओं की जानकारी के लिए एक आदेश जारी कर सकता है। प्रधानाचार्य को अध्यापक को सरस्वती-भ्रमण पर जाने की आज्ञा दे देना भी आवश्यक है, क्योंकि इससे अध्यापक पूर्ण रूप से तैयार हो सकता है।

अध्यापक को क्या प्रबन्ध करना चाहिए ?

(1) सरस्वती-भ्रमण पर जाने के कई दिन पूर्व ही अध्यापक को प्रबन्ध करना चाहिए तथा बालकों की एक छोटी समिति चुननी चाहिए।

(2) किसी भी सरस्वती-भ्रमण पर जाने से पहले अध्यापक को प्रधानाचार्य व प्रबन्ध समिति से विचार-विमर्श कर लेना चाहिए तथा उनसे बालकों को सरस्वती-भ्रमण पर जाने की स्वीकृति लेनी चाहिए।

(3) अध्यापक को किसी स्थान पर सरस्वती-भ्रमण ले जाने से पूर्व यह सोच लेना चाहिए कि वह स्थान पूर्ण सुरक्षित है अथवा नहीं, क्योंकि बालकों के साथ हर प्रकार की जिम्मेदारी अध्यापक की ही रहती है।

(4) जिस किसी दर्शनीय स्थान पर सरस्वती-भ्रमण जा रहा हो, तो वहाँ के अध्यक्ष से किसी निश्चित तिथि के बारे में स्वीकृति ले लेनी चाहिए, जिससे भ्रमण के समय समस्या खड़ी न हो सके, क्योंकि कभी-कभी अचानक ही किसी स्थान पर पहुँचने पर उसके देखने की आज्ञा नहीं मिल पाती है।

(5) जहाँ पर सरस्वती-भ्रमण जा रहा हो, वहाँ पर ठहरने आदि की व्यवस्था पहले से ही कर लेनी चाहिए, क्योंकि किसी-किसी जगह पर किसी निश्चित तिथि को ही भ्रमण करने वालों को निरीक्षण करने की छूट रहती है, इससे वहाँ पर ठहरने की जगह की कमी हो जाती है।

(6) निम्न मुख्य बातों को भी अध्यापक को पहले से ही निश्चित कर लेना चाहिए—

(अ) विद्यालय को छोड़ने व वापस आने का समय।

(ब) होने वाले खर्चे का अनुमान।

Scanned with CamScanner

(स) आवागमन का क्या साधन काम में लाया जायेगा ?

(द) किस मार्ग से यात्रा की जायेगी ?

(य) रास्ते में कहाँ-कहाँ और कितनी-कितनी देर ठहराया जायेगा ?

(र) बालकों से क्या सीखने की आशा की जा सकती है ?

(7) सरस्वती-भ्रमण पर बालकों को ले जाने से पहले अभिभावकों से स्वीकृति ले लेनी चाहिए तथा उनको यह भी आश्वासन दिला देना चाहिए कि वहाँ जाने से खतरा नहीं है।

(8) यदि शाला के पास ही किसी बगीचे, कृषि-क्षेत्र पर सरस्वती-भ्रमण ले जाया जा रहा है तो अभिभावकों की स्वीकृति की आवश्यकता नहीं है परन्तु प्रधानाचार्य से अवश्य स्वीकृति ले लेनी चाहिए।

(9) अध्यापक के लिए यह बहुत हितकर होगा कि वह इस प्रकार के भ्रमण पर जाने से पहले अभिभावकों से लिखित स्वीकृति ले लेता है। कुछ शालाओं से इस प्रकार स्वीकृति सम्बन्धित लिखित फार्म भी होते हैं। इस प्रकार के फार्म में निम्नलिखित आवश्यक बातें होनी चाहिए—

(अ) किस स्थान पर सरस्वती-भ्रमण जा रहा है ?

(ब) भ्रमण पर जाने और आने का समय।

(स) आवागमन के साधन।

(द) वहाँ पर क्या अध्ययन किया जायेगा ?

अन्तिम पत्र की समाप्ति पर होना चाहिए—

मैं, ...को सरस्वती-भ्रमण पर जाने की अपनी स्वीकृति देता हूँ।

.....

अभिभावक के हस्ताक्षर

Scanned with CamScanner